PARIVARTAN परिवर्तन TAKSHILA तक्षशिला

हमार अँगना

अंक 12 | अर्द्धवार्षिक | पूर्व-स्कूल एवं अनौपचारिक शिक्षा पर परिवर्तन के प्रयासों का संकलन, आँगनबाड़ी केन्द्रों के लिए | अप्रैल 2022- सितम्बर 2022

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

बालघर आंगन, परिवर्तन की शिक्षा इकाई की उप इकाई है जो पिछले 9 वर्षो से लगातार आंगनबाड़ी केंद्र के 3-6 वर्ष के बच्चों के साथ जुडी है। इस प्रयास के अंतर्गत बालघर 21 गाँव के 52 आंगनबाड़ी केन्द्रों के साथ जुड़कर काम कर रही है। बालघर आँगन का उद्देश्य बच्चों को खेल, कविता, कहानी के माध्यम से शारीरिक, मानसिक एवं भाषा का ज्ञान करवाना और कार्यक्षेत्र के आंगनबाड़ी केन्द्रों को सुदृढ़ करने हेतु सभी सेविकाओं का मार्गदर्शन करना है। पिछले दो वर्ष कोरोना प्रभाव के कारण अपने कार्यक्रमों को थोड़ा संक्षिप्त की थी, पर अब मध्यम गति से बढ़ते हुए वर्तमान में उपरोक्त 52 केन्द्रों के साथ जुड़कर कार्य को आगे बढ़ा रही है। आँगनबाड़ी केंद्र के द्वारा संचालित कई गतिविधियों एवं कार्यक्रमों जैसे पोषाहार, गोदभराई, दैनिक शैक्षिक गतिविधि इत्यादी कार्यक्रमों में बालघर आँगन का हस्तक्षेप सीधे तौर पर हो रही है। इस अंक के माध्यम से बालघर आँगन के उत्पन प्रभाव, अनेक नयी पहल, केन्द्रों के साथ सहयोग को आप सभी के साथ साझा कर रही हूँ।

पत्रिका के इस अंक में हम पिछले छः माह की गतिविधियों की एक छोटी सी झलक पेश कर रहे हैं। अपने कोर एरिया के कुछ केन्द्रों को चयनित कर सर्वे के माध्यम से उसका आकलन किया साथ हीं साथ आंगनबाड़ी के साथ हमारअँगना पत्रिका के लिए बच्चों के माध्यम से सब्जी प्रिन्ट, कलर प्रिन्ट, थंब प्रिन्ट इत्यादि गतिविधि को कराया गया।

सप्रेम

मधुबाला

हमारी कार्य प्रणाली

परिवर्तन के अंतर्गत बालघर आस पास के कुल 21 गाँवों के 52 आँगनबाड़ी केन्द्रों के साथ कार्यरत है। हमारा काम 3-6 वर्ष के आयु के बच्चों के अन्दर मानसिक, शारीरिक तथा बौद्धिक विकास को प्रबल करना है। मानव जीवन में यह उम्र ऐसी उम्र होती है, जिसे गीली मिट्टी कहा जाता है यह एक ऐसी आयु सीमा है, जिसमें बच्चों का सवार्धिक बौद्धिक विकास होता है। हम भी इसी बात का ध्यान रखते हुए, बच्चों को विकास के लिए खेल-खेल के माध्यम से उन्हें भविष्य में सफल नागरिक बनाने हेतु तैयार करते है ताकि ये बच्चे यहाँ से जाकर अपने केंद्र पर आदर्श बनकर उभरें और अन्य बच्चों को प्रेरित कर सकें। क्लास के लिए हमारे पास 6 माह की एक कार्य योजना है। इस कार्य योजना को बनाने के लिए कुछ संस्थाओं जैसे प्रथम, इकतारा, प्रार्थना किताब अश्वत तथा दिल्ली पब्लिक स्कूल पटना की शिक्षिकाओं एवं परिवर्तन के साथियों को हम धन्यवाद देना चाहते हैं जिनके सहयोग के बिना यह कार्ययोजना सफल नहीं हो पाती।

हमारे पाठ्यक्रमों में मुख्य रूप से तरह-तरह की आवाजों से अक्षर (फोनीटिक साउंड) की पहचान, अपने परिवार की जानकारी देशभक्ति कविता, मन पंसद के खाने, तरह-तरह के पोषक तत्व आदि की जानकारी को शामिल किया गया है जिससे बच्चे इन आवश्यक बातों को खेल के माध्यम से समझ पाये।

आँगनबाड़ी केन्द्रों पर सही पोषण प्राप्ति हेतु पोषण वाटिका लगाने का प्रयास:

पिछले छः माह के दौरान परिवर्तन में कार्यरत कृषि और बालघर आंगन ने मिलकर चार आंगनबाड़ी केन्द्रों पर पोषण वाटिका लगाया गया। जिसमेअलग-अलगप्रकार की सब्जियों को मौसम के अनुसार लगाया गया जैसे - कोहड़ा, नेनुआ, तरोई, भिन्डी इत्यादी। इस प्रयास के अंतर्गत कोशिश यह था कि बच्चों को समयानुसार शुद्ध और ताज़ा सब्जी प्राप्त हों सके। इन सब्जियों से बच्चों को सही पोषण मिल पाया तथा सेविका को बिना पैसें के आसानी से ताजी सब्जियाँ उपलब्ध हो पायी। इस प्रकार हमने देखा की अपने वाटिका से प्राप्त सब्जियों को इन केन्द्रों ने न सिर्फ इस्तेमाल किया बल्कि सेविकाओ के घरों तक भी ये सब्जियां पहुंची। इस तरह से पोषण वाटिका के द्वारा प्राप्त सब्जियों का उपयोग बच्चों के पोषण को बढ़ाने के लिए किया गया।

पंचायत	गाँव	सेविकाओं का नाम
नरेंद्रपुर	बडहुलिया	बबिता पर्वत
नरेंद्रपुर	बडहुलिया	अमिता देवी
मियांभटकन	संजलपुर	आरती देवी
मियांभटकन	गोंठी	दीपशिखा देवी

आँगनबाड़ी केन्द्रों को आदर्श आँगनबाड़ी केंद्र बनने की ओर अग्रसर करने के लिए प्रयास एवं माध्यम

आँगनबाड़ी केन्द्रों को आदर्श आँगनबाड़ी केंद्र बनाने के लिए हमारे कुछ महत्वपूर्ण प्रयास इस प्रकार रहे।

बच्चों की उपस्थति बढ़ाने के लिए केन्द्रों पर नियमित भ्रमण- पहले आँगनबाड़ी केन्द्रों पर बच्चों की उपस्थिति बहुत कम रहती थी। बार-बार केन्द्र विजिट के दौरान सेविका, सहायिका से बातचीत करके, बच्चों के अभिभावक से मिलकर, नियमित रूप से केंद्र पर आने के लिए प्रेरित किया गया, जिससे धीरे-धीरे बच्चों की उपस्थिति में सुधार होने लगा।

पीने के पानी की समस्या– चारों केन्द्रों में से किसी भी केंद्र पर पीनेके पानी की व्यवस्था ना होने के कारण बच्चें चापाकल से पानी पीते थे, लेकिन परिवर्तन के सहयोग से पीने के पानी की व्यवस्था में सुधार हुआ। जहाँ अब इन केन्द्रों पर फ़िल्टर की व्यवस्था हो जाने से बच्चे अब फ़िल्टर से हीं पानी पीते हैं।

साफ़ सफाई की समस्या– उपरोक्त केन्द्रों मे से दो केन्द्रों पर प्रारम्भ में साफ़-सफाई में कमी देखने को मिलता था जैसे बच्चों के बैठने की जगह साफ़ सुथरी न होकर गंदी थी। कमरे के बाहर कूड़े करकट का अम्बार लगा रहता था। परिवर्तन बालघर की प्रशिक्षिका एवं वहां के सेविका सहायिका के सहयोग से सफाई के काम को आगे बढ़ाते हुए पुरानी समस्या से निजात पाने में सफलता पाया गया। आज उन केन्द्रों पर भी साफ़ सफ़ाई से वहां के वातावरण को बदलते हुए महसूस किया जा सकता है।

प्रतिमाह बच्चो में वजन और लम्बाई का जांच ना होना– जैसाकी हम जानते है बाल विकास केन्द्रों (आंगनबाड़ी केंद्र)

पर बच्चों के स्वास्थ्य से सम्बंधित अनेक पहलुओं पर विचार किया जाता है। उनमे से एक है उम्र के अनुसार उनके शारीरिक विकास की जानकारी एवं उसे ठीक करने हेतु जागरूकता के लिए पहल करना। मेरी प्रारंभिक भ्रमण में इन केन्द्रों पर शारीरिक जाँच एवं जागरूकता के पहल की निरंतरता में अभाव देखा गया। हमारा यह प्रयास रहा कि सभी केन्द्रों पर वृद्धि निगरानी चार्ट एवं बच्चों के शारीरिक वजन को नियमित अंतराल पर जाँच करते रहे तथा प्राप्त परिणाम को अभिभावकों तक साझा कर इस समस्या से बाहर आने के लिए समुदाय के लोगों को भी सहभागी बनाया जाया। इस गतिविधि का संतोषजनक परिणाम भी देखने को मिला। मेरे द्वारा लिखे गए पिछले वाक्य को बल इस बात से भी मिलता है कि मेरे 8 विजिट के दौरान हर माह के 14 तारिख को आठों केन्द्रों के बच्चों की लम्बाई की माप और बच्चों का वजन होते देखा गया।

आदर्श आंगनबाड़ी केंद्र की पहल को आगे बढ़ाते हुए हमारे क्रियाकलाप का मुख्य भाग आंगनबाड़ी सर्वे कार्यक्रम भी रहा। मैं आपके समक्ष अपने सर्वे कार्यक्रम की कुछ मुख्य बिंदु साझा कर रही हूँ जो इस प्रकार है -

दिसंबर से अगस्त तक सर्वे का आकलन

समस्या	बेसलाईन सर्वे	मिडलाईन सर्वे	एंडलाईन सर्वे
बच्चों की उपस्थिति में कमी	बेसलाईन सर्वे के 4 केंद्रों में से कोई भी ऐसा केंद्र नही था कि जितना बच्चे केंद्र पर नांमाकित है उसमें से 10 भी बच्चा समय से नहीं आ पाता था।	मिडलाईन सर्वे में 4 केन्द्रों में से 2 केन्द्रों के बच्चे नियमित होने लगे।	एंडलाईन सर्वे में 4 केंद्र में से सभी केंन्द्रों पर बच्चे समय पर उपस्थित होने लगे।
पानी की समस्या	बेसलाईन सर्वे में 4 केन्द्रों में किसी भी केंद्र पर फिल्टर वाटर नहीं था।	मिडलाईन सर्वे तक 4 में से किसी भी केन्द्रों में फ़िल्टर नहीं लगी थी। 2 केन्द्रों पर ढक्कन बंद बाल्टी में पानी रखा जाने लगा।	एंडलाईन सर्वे में 4 केंद्र में से 2 जगह ढक्कन बंद बाल्टी में पानी रखा जाता था इसके साथ ही अन्य 2 केन्द्रों में फिल्टर का उपयोग होने लगा।
आंगनबाड़ी सेंटर पर साफ–सफाई की समस्या	बेसलाईन सर्वे में 4 केंद्र में से किसी भी केंद्र पर साफ सफाई पर ध्यान नहीं दिया जाता था।	मिडलाईन सर्वे में 4 केंद्र में से 2 केंद्र पर साफ–सफाई पर ध्यान रखा जाने लगा।	एंडलाईन सर्वे में 4 केंद्र में से 4 केंद्र पर साफ–सफाई का ध्यान रखा जाने लगा।
प्रतिमाह बच्चों का लम्बाई एवं वजन का आकलन ना होना।	बेसलाईन सर्वे में ये देखा गया कि 4 केन्द्रों में से एक भी केंद्र पर बच्चों का वजन नहीं किया जाता था।	मिडलाईन सर्वे में ये देखा गया कि 4 केन्द्रों में से 3 केंद्र पर बच्चों का वजन होने लगा।	एंडलाईन सर्वे में ये देखा गया कि 4 केन्द्रों में से सभी केंद्र पर बच्चों के नियम बनाकर प्रतिमाह लम्बाई एवं वजन होने लगा।

नन्हें कदम कार्यशाला 2022

“नन्हे कदम” कार्यशाला हमारे उन कार्यशालाओं में से एक है जिसके माध्यम से बच्चों से अनेक पहलुओं पर कार्य करते हुए उनके विकास की कल्पना को साकार करने का प्रयास किया जाता है।

उद्देश्य

इस कार्यशाला का उद्देश्य यह रहा है कि जिन आंगनबाड़ी केन्द्र के बच्चों को परिवर्तन में लाकर यहाँ सिखाये जाने वाली गतिविधियों से जोड़ा जाता है, उन गतिविधि को नन्हे कदम कार्यशाला में बच्चे अपने अभिभावक और केंद्र पर प्रस्तुत करते है। इस जुड़ाव से उनके बच्चों में ने किस प्रकार कई रचनात्मक गतिविधियों को जाना एवं समझा है जो उनके शारीरिक, सामाजिक, एवं समावेशी विकास में सहायक है यह समझ बनती है।

नन्हे कदम कार्यशाला की कुछ प्रमुख गतिविधि:

प्रार्थना-

तुम्ही हो माता-पिता तुम्ही हो, तुम्ही हो बंधू शखा तुम्ही हो ....

इस प्रार्थना को बच्चों ने अपने अभिवावक के बीच प्रस्तुत किया। इस प्रार्थना के प्रस्तुति में बच्चो की तोतली-तोतली आवाजों ने अभिवावक एवं वहां पर उपस्थित लोगों को मत्रमुग्ध कर दिया।

कहानी -

घोसला किसका कहानी के दौरान बच्चे शांन्तिपूर्वक बैठकर कहानी सुन रहे थे। बच्चों के तरफ से आवाज नहीं आ रही थी। लग हीं नहीं रहा था कि यहाँ पर कोई बच्चा भी है। उन सबों को देखकर ऐसा लग रहा लग रहा था कि कहानी उनकी समझ में आ रही है और कहानी के समय बच्चों के तरफ से सवाल और जबाब भी हो रहा था।

कविता–

आई एक खबर कविता का स्वर वाचन किया गया। कविता की प्रस्तुती होने के बाद जीन्नत नाम की एक बोली कि मैडम आप ही बताइये की मटका में हाथी और बंदर एक साथ कैसे सोयेगा। बच्चो के तरफ से इस प्रकार की जिज्ञासाएं उत्पन्न हो रही थी।

रंगों की दुनियां

आर्या और मधुबालाजी के द्वारा बच्चों के साथ कबाड़ से जुगाड़ में पुराने कार्टून कूड़ेदान बनाया गया। जिसमें हर एक बच्चा छापाकला विधि से अपनी-अपनी रूचि के अनुसार अपने हाथों का पंजा उस कूड़ेदान पर लगा रहे थे। इस तरह बच्चे रंगों के साथ खेलते-खेलते इस गतिविधि को पूरा किये।

परिवर्तन में सेविकाओं के लिए आयोजित किया गया सेविका प्रशिक्षण

उद्देश्य:

सेविका प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्देश्य, सेविका, सहायिका को नई- नई गतिविधियों, पठन-पाठन सामग्री का निर्माण करना तथा गतिविधियुक्त पाठ्यक्रम तैयार कराने एवं कौशल प्रदान कराया जाता है, जिससे वो इन गतिविधियों को सिख कर अपने केंद्र के बच्चों को और बेहतर ढंग से इसका लाभ दे पायें।

कार्यशाला विवरण :

20 से 21 सितंबर तक दो दिवसीय सेविका प्रशिक्षण कार्यक्रम को संचालित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में विशेषज्ञ के रूप में पटना दिल्ली पब्लिक स्कूल से दो प्रशिक्षिकाओं को बुलाया गया था।

पहला दिन

सेविका प्रशिक्षण के पहले दिन सभी सेविकाओं के साथ परिचय से शुरुआत किया गया फिर श्वेता और रुचिका मैडम के द्वारा "इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर होना"प्रार्थना का स्वरवाचन करवाया गया। सेविकाओं से यह बातचीत की गयी की हमें प्रार्थना क्यों करनी चाहिये तथा सेविकाओं को प्रार्थना के दौरान के कई बारीकियों पर बात किया गया। प्रार्थना को अपने नियमित गतिविधि से जोड़ने से हमारे दिन की शुरुआत अच्छी होती है। फिर उन्होंने बिरजू भाई की कहानी खिचड़ी सुनाई। कहानी बहुत ही सुन्दर तरीके से रोल प्ले के माध्यम से सुनाया गया। उसके बाद संतुलित आहार के बारे में बताया गया कि किस खाने में कौन- सा तत्व मिलता है साथ हीं साफ -सफाई पर बातकिया गया। करोना काल में जब भी हम अपने घर से निकलते थे तो हैण्डवाश करते थे और सनेटाईजर भी लोगों ने साथ रखना शुरू कर दिया था। उस समय हम सबने साफ़ –सफाई पर विशेष ध्यान देना शुरू कर दिया था जो की अच्छी बात है। फिर प्रशिक्षिका के द्वारा साफ-सफाई पर एक कविता भी सुनाया गया। कविता का नाम था "क्या कहता है हनी सुनो जी ध्यान लगाकर कान, हाथ साफ करने का सदा रखो तुम ध्यान"। कविता सुनाने के बाद हाथ को अच्छी तरह से धोने का तरीका को बताया गया। आगे के गतिविधि में बहुत ही सुंदर तरीके से गिनती को कहानी के माध्यम से सिखाया गया। कहानी के क्रम में आगे एक कहानी दो मेढ़क था, एक का नाम था पड़कु और दूसरा का नाम था मटकू। वो दोनों मिलकर पासा को उछलते और खुद अपना नम्बर बोलते हुए उछलते। उसके बाद उन्होंने एक कहानी सुनाई। जिसका नाम था "मेहनती चींटी और आलसी टिड्डे"कहानी बहुत ही मजेदार तरीके से सुनाया गया। उसके बाद उस कहानी के जरिए बहुत से प्रश्न भी किया गया। जैसे- चिंटी और टिड्डे में मेहनती कौन था ? इत्यादि।

दूसरा दिन

कार्यशाला के दूसरे दिन का प्रशिक्षण पुनः प्रार्थना से शुरू किया गया। उसके बाद सभी सेविकाओं को पहले दिन किये गए गतिविधि का पूर्वाभ्यास करवाया गया। उसके बाद रुचिका मैडम के द्वारा टिपटिपवा की कहानी सुनाई गई जिसमे पांच पात्र थे। यह कहानी छोटे बच्चों के लिए बहुत हीं रोचक था। इस कहानी में दादी, पोता धोबी, धोबन, पंडित और एक बाघ था। कविता-"बिजली बचाओ देश बनाओ" यह कविता अपने जीवन में बचत के महत्व से जुड़ी हुई थी जिसमे पानी, पैसा, बिजली बचाने लिए प्रेरित किया गया। सेविकाओं से इस बात पर जोर दिया गया की हमें बच्चो को बचपन से इन बातो को सिखाना चाहिए। हमेशा के लिए उनके दिमाग में इस तरह की बातें याद रहती है और बच्चे बड़ो से ज्यादा ध्यान देते हैं।

बच्चों को मजेदार तरीके से हाजरी लेने के लिए प्रेरित किया गया। जिसमे जों बच्चा क्लास में आया होगा वह अपने हाजरी बोलने के साथ ही अपने मन पसंद फूल, फल या सब्जी का नाम बता सकता हैं। इससे बच्चो को अनेक तरह के शब्दो की जानकारी भी होगी तथा बहुत सारे फलो, फुलों के बारे में पता भी चलेगा। अंदाज लगाना दोनों हाथो में किसी वस्तु ले कर बच्चो से सवाल करना किस में कम और किस में ज्यादा हैं। उसके बाद बच्चे गिनती करेंगे। ग्रुप गतिविधि जिसमे प्रकृतिक से जुड़ी चीजों से अलग-अलग आकार भी बनवाया गया।

प्रतिक्रिया

निशा देवी सेविका - हमलोगों को सेविका प्रशिक्षण का बहुत दिनों से इंतजार रहता है क्यों कि यहाँ आने के बाद हमको नई-नई गतिविधियाँ सिखने को मिलता है फिर वही गतिविधि हम अपने बच्चों को सिखाते हैं। इस प्रशिक्षण में हमलोग बहुत सी गतिविधि सीखे।

संगीता देवी सेविका-प्रशिक्षण में तो बहुत बार आई हूँ पर इस बार के प्रशिक्षण में हमलोग जो सीखे है शायद ऐसा सीखना बहुत आसान भी है क्योंकि हमलोग के समझ के लिए छोटी-छोटी कविता, कहानी सिखाया गया, जिसको हम अच्छे से सिख कर अपने बच्चों को भी अच्छे से सिखा सकते है।

गुडिया देवी (सेविका)-हमलोग बच्चों के साथ काम करते है, पर जब भी इस प्रशिक्षण में आते है तो सभी अपनी परेशानी भूल कर कुछ समय के लिए खुद बच्चा बन जाते है और खूब मस्ती करते हैं। पर ये सभी मस्ती हमारे कामों से जुडी है एवं बच्चों के लिए लाभकारी भी है। खेल खेल के माध्यम से हम बच्चों को बहुत कुछ सिखा सकते है।

मैने बहुत से प्रशिक्षण देखे हैं पर ऐसा प्रशिक्षण आज से पहले कहीं नही देखा। इस प्रशिक्षण को बहुत नियम तथा खुशनुमा माहौल में दिया जा रहा हैं। इस प्रशिक्षण के लिए हम परिवर्तन के बहुत आभारी हैं तथा दिल से परिवर्तन को धन्यवाद देते हैं।

सेविका का केस स्टोरी

निशा देवी, केंद्र – जीरादेई (तेली पट्टी), कोड - 178

परिवर्तन द्वारा आयोजित सेविका प्रशिक्षण में निशादेवी भी भाग ली थी। जो की जिरादेई पंचायत में जीरादेई गाँव की हीं रहने वाली हैं। निशा जी दोनों दिन के प्रशिक्षण में समय से आ जाती थी। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञ द्वारा किसी भी गतिविधि के समाप्त होते हीं उसपर निशा जी के द्वारा प्रश्न किया जाता था। असल में निशा जी के द्वारा उन गतिविधियों को सही समझने एवं मन में बैठाने के लिए यह सभी प्रतिक्रियाएं की जा रही थी जो इस बात का सूचक था की निशा जी प्रशिक्षण में पूरी तरह से रूचि ले रही थीं। सेविका प्रशिक्षण में कुल 100 सेविकाएँ उपस्थित रहती थी पर ज्यादातर प्रश्न का जबाब निशा जी के ही तरफ से दिया जा रहा था।

बिंदु देवी, केंद्र – गोंठी (यादव टोला), कोड - 10088

बिंदु जी सिवान जिला के जीरादेई प्रखंड के मियाँ भटकन पंचायत में गोंठी गाँव में यादव टोला में पड़ने वाले केंद्र की सेविका है। गोठी गाँव में प्रत्येक सप्ताह मेरा विजिट बिंदु जी के सेंटर पर किया जाता था। इस दौरान दो घंटे के क्लास में मै बच्चों के साथ रहती थी। जब तक मैं क्लास में गतिविधि करती थी तब तक बिंदु जी चुप–चाप बैठकर मेरा क्लास देखती। एक दिन जब क्लास खत्म होने के साथ ही बिंदु जी बोली की मैडम जी आप जो प्रार्थना और बालगीत कराती हैं, आप उसको मेरे मोबाईल में भी डाउनलोड कर दीजिए। मैं भी अपने केंद्र पर बच्चो के साथ करवाना चाहती हूँ। मैने उस दिन उनके मोबाईल पर वह प्रार्थना गीत डाउनलोड कर दी और हँसते हुए बोली की देखती हूँ आप बच्चों को क्या–क्या सिखातीं हैं। और मैं वहां से अपने केंद्र पर लौट गई। अगले सप्ताह जब मै बिंदु जी के सेंटर पर गई मेरे जाते के साथ ही सारे बच्चों ने जोर-जोर से आवाज लगाने लगे परिवर्तन की मैडम आ गई। मैंने सभी बच्चों को बैठने को कहा, बच्चे अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए। मेरे पूछने से पहले ही बच्चे बताने लगे की मैडम जी हम सभी बच्चे प्रार्थना याद कर लिए है। बच्चो की बातें सुनकर मुझे भी ख़ुशी हुई। जब मेरी बात बिंदु जी होने लगी तो उन्होंने बताया की सब परिवर्तन का प्रयास है बस मैंने थोड़ा सा इन बच्चों के साथ मेहनत किया है।

बच्चों का केस स्टोरी

हुमेरा खातून, घर – नरेन्द्रपुर

नाम – हुमेरा खातून घर नरेंद्रपुर है जो परिवर्तन परिसर के सबसे पास के गाँव में से एक है। हुमेरा का उम्र 4 साल है। ये तीन बहनें हैं तीनो बहन में हुमेरा सबसे छोटी है। परिवर्तन द्वारा आयोजित गतिविधि शिविर में हुमेरा भी भाग ली थी। छः दिन के शिविर में हुमेरा नियमित रही आगे चलकर हुमेरा बालघर-आँगन की नियमित छात्र बन गई। हुमेरा देखने में लड़का जैसे ही दिखती है तथा उसके मम्मी पापा उसका पोशाक भी उसे लड़के वाला ही पहनाते हैं। उसको देखकर कोई भी बच्चा लड़का ही समझता है। क्लास खत्म होने के बाद मैंने बच्चों से पूछा की लाल रंग का कौन-कौन सा चीज होता है सारे बच्चें कुछ समय तक चुप रहे। फिर हुमेरा बताने लगी की लाल कपड़ा, लाल चप्पल, लाल सेव, लाल मिर्ची इत्यादि बहुत सारे चीजों का नाम। मै तो डर ही रह गई की जो कभी क्लास के डर से बोलती ही नहीं थी आज वही हुमेरा लगातार बोले जा रही है। यह बदलाव बच्चों में इस प्रकार के माहौल में लगातार रहने से हीं मिल पता है।

रौशनी कुमारी, घर – गोंठी

बालघर-आँगन की दूसरी कहानी रौशनी कुमारी की है। जिसका घर गोंठी और उम्र 5 साल है। रौशनी अपनी नानी के घर रहती है और उसी गाँव के आंगनबाड़ी सेंटर पर पढ़ती भी है। हर सप्ताह मेरा भ्रमण गोठी गाँव के आँगनबाड़ी सेंटर पर तय रहता था। अगस्त का महिना था और मेरे क्लास का थीम भी हमारे तीज त्यौहार था। मैंने विजिट के दौरान बच्चों को एक कविता सुनाई जिसका नाम था राखी का त्यौहार आया। कविता सुनाने के बाद उस कविता पर बच्चों से बातचीत की। सभी बच्चों ने अपनी समझ के अनुसार कुछ ना कुछ बताने लगे। जब रौशनी का बारी आया तो रौशनी अपनी सारी बातें आराम-आराम से बताने लगी की इस साल रक्षाबंधन में मेरा भाई हमको एक बहुत सुन्दर गुड्डा खरीदकर दिया हैऔर साथ में 10 रुपया भी दिया है। दस रुपया के नाम लेते ही रौशनी के चेहरे पर मुस्कान आ गया।